प्रातः क्लास 8-6-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। यूं तो है डबल ओमशान्ति।क्योंकि दो आत्मायें हैं।दोनो आत्माओं का स्वधर्म है शान्त। बाप का भी स्वधर्म है शान्त।बच्चे वहां शान्ति में रहते हैं। उसको ही कहा जाता है शान्तिधाम। बाप भी वहां रहते हैं।बाप तो सदैव ही पावन है। बाकी जो भी मनुष्य मात्र हैं वह पुनर्जन्म ले अपवित्र बनते हैं। बाप बच्चों को कहते हैं बच्चे अपन को आत्मा समझो। आत्मा जानती हैपरमपिता परमात्मा ज्ञान का सागर है।शान्ति का सागर है।उनकी महिमा है ना।वह सभी का बाप है।और सर्व की सदगति दाता भी है। तो सभी का बाप के वर्से पर हक जरूरलगता है। बाप से वर्सा क्या मिलता है। बच्चे जानते हैं बाप स्वर्ग का रचयिता है तो जरूर स्वर्ग का वर्सा ही देंगा।और देंगे भी जरूर नर्क में। नर्क का वर्सा दिया है रावण ने। इस समय सभी नर्कवासी हैं। तो जरूर वर्सा रावण से मिला है। नर्क और स्वर्ग दोनो है। यह कौन सुनती है? आत्मा। अज्ञान काल में भी सभी कुछ आत्मा ही करती है।परन्तु देह अभिमान कारण समझते हैं शरीरसब कुछ करता है। हमारा स्वधर्म है शान्त। यह भूल जाते हैं हम आत्मा हैं।हमारा स्वधर्म है शान्त। रहने वाले भी शान्तिधाम के हैं। यह कोई भी नहीं जानते। इतने बड़े विद्वान पंडित आद कुछ भी नहीं जानते। यह भी समझना चाहिए सच्च खण्ड ही फिर झूठ खण्ड बनता है। भारत स्वर्ग सच्च खण्ड था। फिर रावण राज्य झूठ खण्ड भी बनता है।यह भी तो कामन बात है।मनुष्य क्यों नहीं समझ सकते हैं क्योंकि आत्मा तमोप्रधान हो गई है।जिसको ही पत्थर बुधि कहते हैं।पत्थर बुधि कैसे बने हैं,नर्क मे गोता खाते- खाते।और दूसरा फिर ग्लानी की है।जिसने भारत को स्वर्ग बनाया ,पूज्य बनाया वही फिर पूजारी बन गाली देने लगे।इसमें भी कोई का दोष नहीं। बाप बच्चों को समझाते हैयह ड्रामा कैसे बना हुआ है। कैसे पूज्य से पुजारी बने। बाप समझाते हैं आज से 5000 वर्ष पहले भारत में आदी सनातन देवी देवताओं का धर्म है।कल की बात है।परन्तु मनुष्य बिल्कुल भूले हुये हैं। यह शास्त्र आद सभी भक्ति मार्ग के लिए बनाई है।शास्त्र है ही भक्ति मार्ग के लिए।न कि ज्ञान मार्ग के लिए।ज्ञान मार्ग का शास्त्र है नहीं। बाप ही कल्प2 आकर बच्चों को नालेज देते हैं।देवता पद के लिए। उनका शास्त्र बनता ही नहीं।बाप पढ़ाई पढ़ाते हैं यह ज्ञान फिर प्रायः लोप हो जाता है।सतयुग में कोई शास्त्र होता नहीं।क्योंकि वह तो है ज्ञान मार्ग की प्रारब्ध 21 जन्मों लिए।बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है।आधा कल्प के लिए। फिर पीछे रावण का वर्सा मिलता है अल्प काल के लिए। जिसको सन्यासी लोग काग बिष्टा समान सुख कहते हैं। काग बिष्टा समान सुख क्या यह भी तुम जानते हो।कुछ भी है नहीं। इनका नाम ही है दुःखधाम। कलियुग के पहले है दपावर।इसको कहेंगे सेमी दुःखधाम। आत्मा ही 84 जन्म लेती है।नीचे उतरती है। बाप चढ़ाई चढ़ादेते हैं।क्योंकि चक्र को फिरना जरूर है।नई दुनिया थी।आदी सनातन देवी देवताओं का राज्य था। दुःख का नाम निशान न था ।इसलिए दिखाते हैं शेर बकरी भी इकट्ठे जल पीते हैं। वहां हिंसा आद की बात ही नहीं।अहिंसा परमोधर्म देवी देवता कहा जाता है।यहां है हिंसा। पहले2 हिंसा है कामकटारी चलाना।सतयुग में विकारी होते ही नहीं। उन्हों की तो महिमा गाते हैं।आप सर्व गुण सम्पन्न ....।उस दुनिया के लिए भी कहते हैं वायसलेस वर्ल्ड।पवित्र नई दुनिया को,अपवित्र पुरानी दुनिया को कहा जाता है।यह=कलियुग= कलियुग है आयरन एजेड वर्ल्ड।इनको कोई गोल्डेन एज तो नहींकहेंगे।आयरन एजेड पत्थर बुधि विषस ठहरे।ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है।विषस से वायसलेस,वायसलेस ये विषस बनती है।यह भी नाटक बना हुआ है।सतयुग है शिवालय। वहां सभी है पावन। जिन्हों के चित्र भी हैं। शिवालय बनाने वाले शिव बाबा का चित्र भी हैं।भक्ति मार्ग में उनको अनेक नाम दे दिये हैं।वास्तवमें नाम है एक। बाप को अपना शरीर तो है नहीं।खुद कहते हैं मुझे आना परिचय देने वारचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान सुनाने आना पड़ता है। मुझे आकर तुम्हारी सार्वस करनी होती है। तुम ही मुझे बुलाते हो।हे पतित पावन आओ। सतयुग में नहींबुलाते हो। इस समय बहुत बुलाते हैं क्योंकि विनाश सामने खड़ा है।भारतवासी जानते हैयह

वही महाभारत लड़ाई है। फिर आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना होती है। बाप भी कहते हैं मैं राजाओं का राजा बनाने आया हूं। आजकल तो महाराजा बादशाह आद है नहीं। अभी तो प्रजा का प्रजा पर राज्य है। यह है अनलाफुल इरीलिजीयस, इनसालवेन्ट राज्य। बच्चे समझते हैं हम भारतवासी सालवेन्ट थे। हीरे जवाहरों के महल थे। नई दुनिया थी नई से फिर पुरानी बनी है। हर चीज़ पुरानी होती है। जैसे मकान बनाते हैं फिर आखीरीन आयु कम होती जावेगी। कहा जावेगा यह नया है यह आधा पुराना है। यह मध्यम है।

हरेक चीज़ सतो रजो तमो होती है। सारी दुनिया भी ऐसे ही सतो रजो तमो में आती है। भगवानुवाच है ना भगवान माना ही भगवान। भगवान किसको कहा जाता है यह भी पत्थर बुधि समझते नहीं हैं। राजा रानी तो है नहीं। यहां है पेजीडेन्ट प्राईम मिनिस्टर और उनके ढेर मिनिस्टर्स। सतयुग में तो है यथा राजा रानी तथा प्रजा। फर्क भी बाप ने बताया है। सतयुग के जो मालिक हैं उन्हों का मिनिस्टर्स एडवाईजर होते ही नहीं। दरकार ही नहीं। इस समय ही शिव बाबा से ताकत प्राप्त कर वह पद लेते हैं। इस समय बाप से ऊंच राय मिलती है जिससे ऊंच पद पाया। फिर कोई से राय लेंगे ही नहीं। वहां वजीर होते ही नहीं। वजीर तब होते हैं जब बाम मार्ग में जाते हैं। अकल चट हो जाता है। मूल बात है विकार की। देह-अभिमान से ही विकार होते हैं। उन में काम है नम्बरवन। बाप कहते हैं यह काम महाशत्रु है। उन पर जीत पानी है। बाप ने बहुत बार समझाया है अपन को आत्मा समझो। अच्छे वा बुरे संस्कार आत्मा में रहता है। यहां ही कर्मों को कुटनाहोता है। सतयुग में नहीं। वह है सुखधाम। बाप आकर तुम बच्चों को शान्तिधामसुखधाम का वासी बनाते हैं। बाप डायरेक्ट आत्माओं से बात करते हैं। सभी को कहते हैं आत्मा निश्चय बुधि होकर बैठो। देहअभिमान छोड़ो। यह देह अविनाशी है। आत्मा अविनाशी है। तुम अपन को आत्मा समझ बैठो। यह ज्ञान और कोई में है नहीं। ज्ञान का पता न होने कारण भक्ति को ही ज्ञानसमझ लिया है। अभी तुम बच्चे समझते हो भक्ति अलग है। ज्ञान से तो सदगति होती है। अर्थात भक्ति से दुर्गति है कायदे अनुसार। क्योंकि यह है हीरावण राज्य। यह बातें कोई जानते ही नहीं हैं। भक्ति का सुख है अल्प काल के लिए। क्योंकि पापात्मा बन जाते हैं। विकार में चले जाते हैं आधा कल्प के लिए। बेहद का वर्सा जो मिला था वह पूरा हुआ। अभी फिर बाप वर्सा देने आये हैं। जिसमें पवित्रता सुख शान्ति सभी मिल जाती है। तुम बच्चे जानते हो यह पुरानी दुनिया तो कब्रस्तान बनना ही है। अभी इस कब्रस्तान से दिल हटाकर परिस्तान नई दुनिया से दिल लगाओ। जैसे लौकिक बाप मकान बनाते हैं तो बच्चों की बुधि योगपुराने मकान से निकल नई में लग जाता है। आफिस में बैठा होगा तो भी बुधियोग नये मकान तरफ होगा। वह है हद की बात। बेहद का बाप तो नई दुनिया स्वर्ग रच रहे हैं। कहते हैं अभी पुरानीदुनिया से सम्बन्धतोड़ एक मुझ बाप के साथ जोड़ो। तुम्हारे लिए नई दुनिया स्वर्ग स्थापन करने आया हूं। अभी पुरानीदुनिया खलास होनी है। सारी पुरानीदुनिया इस ज्ञान यज्ञ में झवाहा होनी है। यहपुरना झाड़ जड़जड़ीभूत तमोप्रधान हो गया है। अभी फिर नया बनना है।

तो बाप समझाते हैं यह है नई बातें। जैसे मनुष्य बिमार में होपलेस हो जाते हैं ना। समझते हैं इनका बचना मुश्किल है। वैसे यह दुनिया भी होपलेस है। कब्रस्तान बनना है। फिर उनको याद क्यों करना चाहिए। यह है बेहद का सन्यास। वह है हठयोगी सन्यासी। सिर्फ घर बार छोड़ कर जाते हैं। यह ज्ञान हठयोगी सन्यासियों पास है नहीं। भक्ति मार्गमें मातायें बैठ उन हठयोगियों को गुरु करते हैं। उनके पांव धो पीते हैं। अभी सतगुरु और उन गुरुओं में कितना फर्क है। सतगुरु तो पूजा आद कुछ भी नहीं कराते हैं। न पांव आद पड़ना है। यह तो कहते हैं हम भी औविडियन्ट सर्वेन्ट हैं। मैं बच्चों की सर्विस में आया हूं। मुझे बुलाया है बाबा हम पतित बन गये हैं। आकर पावन बनाओ। निमंत्रण देते हो ना हे बाबा आओ हम पतित दुःखी बन गये हैं। आप पतित दुनिया और पतित शरीर में आओ। निमंत्रण

देखो कैसा देते हैं। पतित बनाने वाला रावण सामने खड़ा है। जिसको बजलाते रहते हैं। यह बहुत कड़ा दुश्मन है। जब से यह रावण राज्य आया है तुमको आदि मध्य अन्त दुःख मिला है। विषय सागर में गोता खाते रहते हैं। विख मिला गोला अमृत का प्याला मिला। अभी बाप कहते हैं बिख छोड़ ज्ञान अमृत पीओ। आधाकल्प रावण राज्य में तुम ने बिख पीआ है। कितने दुःखी बन गये हो। इतने मतवाले बन जाते हो जो गाली बैठ देते हो। गाली भी इतनी देते हो कमाल करते हो। जो तुमको पावन विश्व का मालिक बनाते हैं उनको ही सब से जास्ती गाली देते हो। मनुष्यों के लिए तो कहते हो 84 लाख योनियां। और मुझे तो ठिक्कर भित्तर में ठोक दिया है। अपने से भी जास्ती दुर्गति कर दी है। यह भी ड्रामा है। तुमको हंसी कुइडनी में समझाते हैं तुम्हारी दुर्गति हुई है इस बात से। ठिक्कर भित्तर सब में ठोक दिया है। कब फिर कहते हैं कच्छ अवतार मच्छ अवतार। तो गोया जनावरों की अवतार हो गया। कच्छ मच्छ का बच्चा हो जावेगा। कितनी गालियां देते हैं। बाप को गाली देते हैं गुप्त रीति। तब बाप कहते हैं जब जब भारत का यहहाल होता है। वह लोग तो फिर भी समझ है। कहते हैं ओ गाड फादर। हमको लिबरेट करो, गाईड कर ले चलो। सीधी बात कहते हैं। भारतवासियों ने तो मिट्टी में मिला दिया है। भक्ति में 100% मेड चैप्स बन पड़ते हैं। भगवान को बैठ गाली देते हैं। और कोई काम ही नहीं। गाली तब देते हैं जब विकारी बनते हैं। इसलिए बाप समझाते रहते हैं भक्ति मार्ग ही दुर्गति मार्ग। सीढ़ी उतरते तमोप्रधान बनते जाते हैं। अच्छे वा बुरे लक्षण आत्मा के ही होते हैं। आत्मा कहती है हम 84 जन्म भोगते हैं। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। यह भी अभी बाप ने समझाया है। ड्रामा के प्लैन अनुसार फिर भी बाप आकर उल्लू जो उल्टी लटक पड़े हैं उनको सुल्टा बनाते हैं। क्योंकि अपने को आत्मा के बदली शरीर समझ बैठे हैं। तो उल्टी हो गये ना। यह है भ्रष्टाचारी उल्लूओं की दुनिया। श्रेष्ठाचारी है अल्लाह की दुनिया। बाप कहते हैं मीठे बच्चों यहां तुम उल्टी होकर न सुनो। अपने को आत्मा समझ कर बैठो। उल्लू को अल्ला थोड़े ही मिलता है। अभी तुम को अल्ला बाप मिला है तो सुल्टा बनाते हैं। रावण उल्टा बनाता है। फिर सुल्टा बनने से सीधे खड़े हो जाते हो। यह एक नाटक है। यह ज्ञान बाप ही बैठ समझाते हैं। भक्ति मार्ग है ज्ञान मार्ग है। ज्ञान ज्ञान है भक्ति बिल्कुल अलग है। भक्ति है रात का मार्ग। रात में मनुष्य धक्के खाते हैं। शास्त्रों आदि में सभी हैं झूठी बातें। कहते हैं कैलाश में तालाब है वहां परियां रहती थी। पार्वती को अमरकथा सुनाई। अभी तुम अमरकथा सुन रहे हो ना। सिर्फ एक पार्वती को अमर कथा सुनाई क्या। यह तो बेहद की बात है। अमरलोक सतयुग, मृत्युलोक कलियुग को कहा जाता है। इनको कांटों का जंगल कहा जाता है। जंगल में जनावर ही रहते है। बाप को जानते ही नहीं। कहते भी हैं हे परमपिता परमात्मा हे भगवान परन्तु जानते ही नहीं। तुम भी नहीं जानते थे। तुमको बाप ने आकर सुल्टा बनाया है। भगवान को अल्लाह कहा जाता है। अल्ला पढ़ा कर अल्ला पद देंगे ना। परन्तु भगवान एक है। इनको (ल०ना०) को भगवान भगवती नहीं कहेंगे। यह तो पुनर्जन्म में आते हैं ना। मैं ने ही इन्हों को पढ़ा कर देवी गुणों वाला बनाया। तुम सभी ब्रदर्स हो। बाप के वर्से के हकदार हो। मनुष्य तो घोर अंधियारे में हैं। आसुरी सम्प्रदाय है ना। गुरुओं ने घोर अंधियारे में डाला है। कहते हैं कलियुग तो अजन बच्चा है। बहुत बर्फ पड़े हैं। कितना अज्ञान अंधेरा में सोये पड़े हैं। यह भी खेल है। अंधेरे में दुःख नहीं होता। यह भी तुम ही समझते हो। औरों को समझाते रहो। पहले2 तो हरेक मनुष्य बाप का परिचय देना है। दो बाप हैं हरेक के होते हैं। हद का बाप हद का सुख देते हैं। बेहद का बाप बेहद का सुख देते हैं। शिवरात्रि मनाते हैं तो जरूर बाप आते हैं स्वर्ग स्थापन करने। जो स्वर्ग पास हो गया है वह फिर स्थापन हो रही है। अभी है तमोप्रधान दुनिया। नर्क। ड्रामा अनुसार जब एक्युरेट समय होता है तब फिर मैं अपना पार्ट बजाता हूं। मैं तो हूं निराकार। मुझे मुख तो जरूर चाहिए ना। बैल वा गैदहे का

थोड़े ही होगा। मनुष्य मुझ इनका लेता हूं जो बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में वानप्रस्त अवस्था में है। उन में प्रवेश करता हूं। पहले2 कौन बिछुड़ कर पार्ट बजाने आते हैं। पहले2 नम्बरवन में है श्री कृष्ण। विश्व का मालिक। फिर 84 जन्म लेते2 क्या आकर बना है। गांव का छाड़ा यह भी गाया हुआ है। यह अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। बुधू है। यह तो जरूर सुनी सुनाई बातें जानते हैं। इस बुधु ने गुरु भी बहुत किये हैं। जब अन्तिम जन्म में पूरा बुधु बन जाते हैं तब मैं इन में प्रवेश कर फिर इनको पहले नम्बर में ले आता हूं। इनके साथ तुम सभी भी बुधू थे। वह दिखाये और यह विद्यायों बुधू ही पढ़ते हैं। अभी बाप समझाते हैं यह ज्ञान तो बहुत ही सहज है। सिर्फ मुझ बाप को याद करो तो स्वर्ग का वर्सा मिलेगा। पहले नम्बर में जो देवतायें थे वही पुनर्जन्म लेते2 बिल्कुल बुधू बन जाते हैं। यह भी खेल है। जो कुछ होता आया है यह फिर भी होगा। यह बड़ा ही वन्डर फुल अविनाशी खेल है। बाप ने ड्रामा का चक्र समझाया है। बुधू बनना, फिर विश्व का मालिक बनना। सांवरा और गोरा। श्याम और सुन्दर भी ल०ना० को नहीं कहते। इन छोटे बच्चे को पकड़ लिया है। भील भी इनको बनाया है। गईयां चराने वाला। बाप अपना बतलाते हैं ना हम गईयां तो गदहे और बकरियां भी चराई है। यह है सारा खेल। यह बड़ा भजे का खेल है। खेल को देखते बड़ा हर्षित होना चाहिए। मनुष्य खेल देखते हैं तो हंसते भी हैं रोते भी हैं। इस बेहद के खेल को समझना है। मनुष्य हैं सभी खेल के एक्टर्स परन्तु जंगली हैं। ड्रामा के आदि मध्य अन्त को जानते ही नहीं। तो जंगली कहेंगे ना। एक दो को कांटा लगाते रहते हैं। अभी बाप आर्डीनेन्स निकालते हैं काम महाशत्रु है। इन पर जीत पानी है। इनको जीतने से तुम जगत जीत बनेंगे। यह सभी छोड़ो। इन से तो मिलता कुछ भी नहीं है। जैसे वह लोग कहते हैं कि शराब पीना बन्द करो। भगवान फिर कहते हैं विष पीना बन्द करो। पवित्र बनो। यह तो सभी का बाप है ना। बच्चों को कहते हैं तुम काम चिता पर चढ़ने से काले आसरन एजेंड बन पड़े हो। अभी ज्ञान चिता पर बैठो। एक जन्म पवित्र बनो तो 2। जन्म पवित्र बन जायेंगे। वहां कब ख्याल भी नहीं आवेगा। सतयुग है ही पवित्र दुनिया। यह दुनिया तो विनाश होनी है। मनुष्य इतने लाख आद कमाते हैं। कोई के भी बच्चे वारस पा न सकें। सभी की मिलकीयत इस ज्ञान यज्ञ में स्वाहा हो जावेगी। मनुष्य अज्ञान काल में दान करते हैं तो दूसरे जन्म में अल्प काल लिए सुख मिलता है। हास्पीटल बनाते हैं दूसरे जन्म में अच्छी हैल्थ मिल जाती है। जरूर अच्छे कर्म किये हैं जिसका फल मिला है सो भी एक जन्म के लिए। गरीब को पैसे आददान करते हैं तो दूसरे जन्म में पैसे मिलते हैं। परन्तु फिर बिमार पड़ सकते हैं। बाकी अल्प काल लिए धन मिल जाता है। अभी बाप कहते हैं मैं हूं डायरेक्ट। जिस रथ में हमने प्रवेश किया है उसने भी देखो क्या किया है। करनकरावन हार है ना। अभी तुम कह सकते हो बाबा कराते हैं। भक्ति मार्ग में थोड़े ही कराते हैं। वा प्रेरणा देते हैं। सारा दिन प्रेरणा ही देते रहेंगे क्या। प्रेरणा का कोई दूकान निकला है क्या। बाप सम्मुख कहते हैं मैं आकर पढ़ाता हूं। यह किसकी बुधि में भी नहीं है। यह बाप टीचर गुरु एक ही हैं। बाप हमारी पालना भी करते हैं। पढ़ाते भी हैं। पावन भी बनाते हैं। नई दुनिया बन जाती है तो फिर हिसाब-किताब चुकुत कर चले जावेंगे। बाकी थोड़े रहेंगे। पुरानी दुनिया में 500करोड़। नई दुनिया में तो होते ही बहुत थोड़े हैं। हरेक चित्रों में यह बातें लगी हुई है। जिन्हों ने बहुत भक्ति की होगी वही आकर ज्ञान लेंगे। यह चक्र फिरता रहता है। फर्स्ट से लास्ट में जाता है। लास्ट वाला फिर फर्स्ट में जाता है। यह बाप बैठ समझाते हैं। वह कुछ पढ़ा है क्या। भगवान को मां-बाप, टीचर गुरु आद हैं? कुछ भी नहीं। फिर भी भगवान को क्यों कहते ज्ञान का सागर पतित पावन.... कहते हैं भगवान ब्रहमा द्वारा सभी वेदों शास्त्रों का सार सुनाते हैं। वह सभी हैं भक्ति मार्ग के शास्त्र। उनका सार बैठ बाप बतलाते हैं। वह तो कुछ पढ़ा हुआ नहीं है। तो फिर गुरु कहां से आया। अभी शिव बाबा कहते हैं मुझ याद करो तो तुम्हारा वरसा है ही। अच्छा मीठे2 बच्चों को यादप्यार गुडमार्निंगनमस्ते।

*:***:*